सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन–चुनौतियाँ और संभावनायें

अनुज कुमार*

मूल्यांकन सीखने की प्रक्रिया का एक अभिन्न हिस्सा है जिससे विद्यार्थी के अधिगम विकास और उपलब्धियों की जानकारी मिलने के साथ-साथ शिक्षा की गुणवत्ता, पाठ्यचर्या की प्रभावशीलता और शिक्षण कौशलों का आकलन भी होता है। मूल्यांकन प्रणाली में समय-समय पर आवश्यकतानुसार बदलाव होते रहे हैं। सत्र के अंत में ली जाने वाली परीक्षा के स्थान पर विद्यालयी स्तर पर अब सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के प्रयोग को बढ़ावा दिया जा रहा है। कई राज्यों ने इस मूल्यांकन प्रणाली को लागू करना भी आरंभ कर दिया है। परंतु अभी इस प्रणाली से सभी अध्यापक, माता-पिता व विद्यार्थी पूरी तरह से परिचित नहीं हैं। प्रस्तुत लेख में सतत एवं व्यापक मूल्यांकन प्रक्रिया को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है। यह मूल्यांकन प्रक्रिया परंपरागत मूल्यांकन प्रणाली से किस तरह भिन्न अथवा बेहतर है यह भी बताया गया है। साथ ही सतत एवं मूल्यांकन के क्रियान्वयन से जुड़ी चुनौतियों की भी चर्चा की गई है।

प्रत्येक समाज एवं राष्ट्र के विकास में शिक्षा का विशेष महत्व है। इसलिए प्रत्येक देश मानवीय संसाधन को श्रेष्ठ, योग्य एवं प्रशिक्षित करने के लिए शिक्षा पर आश्रित होता है। इस दृष्टि से शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में मूल्यांकन का महत्वपूर्ण स्थान है। मूल्यांकन से अधिगमकर्ता की उपलब्धियों की जानकारी मिलती है, वहीं शिक्षक द्वारा प्रदान की जाने वाली शिक्षा की गुणवत्ता, उसकी प्रभावशीलता और कौशल का आकलन भी होता है। लंबे समय से चली आ रही शिक्षा प्रणालियों में शैक्षिक उपलब्धियों का मूल्यांकन सत्र के अंत में आयोजित की जाने वाली परीक्षा एवं साक्षात्कार के माध्यम से किया जाता रहा है। शैक्षिक संस्थानों के परीक्षा प्रकोष्ठ द्वारा सत्र के अंत में छात्रों को अपने विचार लिखित

* *अध्यापक*, जवाहर नवोदय विद्यालय, सिरमौर, जिला -रीवा, मध्य प्रदेश 486448

रूप में प्रस्तुत करने होते हैं। कहीं इसके साथ कुछ अंकों के साक्षात्कार की व्यवस्था भी होती है। मूल्यांकन की यह विधा परीक्षा के नाम से अभिहित की गई है। यह परीक्षा अधिगमकर्ता द्वारा एक निश्चित अवधि में सीखे गये ज्ञान, कौशल और अनुभव की सूचक मानी जाती है। परीक्षा के उपरांत प्राप्त उपाधि या प्रमाण-पत्र अधिगमकर्ता की योग्यता का भी सूचक था या है। परीक्षा की यह अंकीय प्रणाली छात्रों के बीच योग्यता व मेधा का निर्धारण प्राप्त अंकों के आधार पर करती है। एक अंक की कमी बेशी से छात्र की योग्यता का स्तर कम और अधिक हो जाता है जो तर्कसंगत नहीं है। सामाजिक दृष्टिकोण से एक अंक अधिक प्राप्त छात्र दूसरे से अपने को श्रेष्ठ मानता है जबकि मूल्यांकनकर्ता वस्तु निष्ठता संदेह से परे नहीं है। शिक्षा-शास्त्रियों एवं शैक्षिक चिंतकों के शोध एवं गत दशकों से प्रचलित मूल्यांकन प्रणाली के विश्लेषण से इसमें अनेक विसंगतियाँ एवं दोष उजागर हुए हैं। वर्तमान परीक्षा प्रणाली में कक्षा के प्रत्येक छात्र को एक ही पाठ्यक्रम को एक पूर्व निश्चित समय में तैयार करना होता है और उनकी परीक्षा भी एक साथ होती है। जबकि जीवन के किसी भी क्षेत्र में दो व्यक्तियों के व्यवहार एक समान नहीं होते हैं। फिर एक ही परीक्षा प्रणाली के आधार पर उनकी योग्यता का मूल्यांकन कैसे किया जा सकता है? मानव स्वभाव से सृजनशील प्राणी रहा है। प्राचीन काल से अब तक जितनी भी नई खोजें हुई हैं वे उसी सृजनशीलता का परिणाम रही हैं। विद्यार्थियों के व्यवहार परिवर्तन का मूल्यांकन करने के उद्देश्य से एक नए प्रतिमान की आवश्यकता महसूस की गई है। मूल्यांकन के क्षेत्र में विद्यालय स्तर पर 'सतत एवं व्यापक मूल्यांकन' की खोज एक नई अवधारणा है। विगत कुछ वर्षों से देश की नियामक शैक्षिक संस्थाओं द्वारा इसे प्रारंभिक स्तर से लेकर उच्च शिक्षा के क्षेत्र में सफलीभूत करने हेतु क्रान्तिकारी प्रयास किये जा रहे हैं। परंतु शिक्षा के क्षेत्र में इस अभिनव प्रयोग के समक्ष अनेक चुनौतियाँ हैं जो इसके कार्यान्वयन में रुकावट डाल रही हैं। मूल्यांकन के नये मापदंड के निर्माण तथा मूल्यांकन की निष्पक्ष विधियों को लेकर प्रश्न चिह्न उभरे हैं जो शोध की विषय-वस्तु हैं।

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन, मूल्यांकन की वह विधा है जो विद्यार्थी के सभी क्षेत्रों यथा संज्ञानात्मक, कार्यात्मक और भावात्मक के साथ जीवन कौशल से जुड़े जीवन मूल्यों का आकलन पूरे सत्र निर्बाध गति से करके उसे श्रेणी के रूप में व्यक्त करती है। मूल्यांकन की यांत्रिक प्रक्रिया से अलग विभिन्न विधाओं द्वारा शिक्षण को रुचिकर, प्रासंगिक और अर्थपूर्ण बनाना ही इसका उद्देश्य है। जिसमें विद्यार्थी उत्साह के साथ भाग लेकर सीखने को तत्पर हो सकें। मूल्यांकन की यह प्रविधि मूल्यांकनकर्ता के सूक्ष्म निरीक्षण एवं गहन आकलन कौशल की मांग करती है क्योंकि इसके अभाव में यह विद्यार्थी की उपलब्धियों

के साथ न्याय नहीं कर पाएगी। वर्तमान में विद्यर्थियों में परीक्षा के व्याप्त भय को कम करने, उन्हें जीवन कौशल के प्रति अभिप्रेरित करने एवं गुणवत्ता पूर्ण शैक्षिक उपलब्धियों के आकलन के उद्देश्य से इसका महत्व प्रासंगिक और तर्क संगत हो जाता है। सतत एवं व्यापक मूल्यांकन की यह अवधारणा चुनौतियों से भरी है। वहीं दूसरी ओर इसमें व्यापक संभावनाएं भी हैं जो हमें वैश्विक शैक्षिक नीतियों के संदर्भ में उपयोगी व तर्कपूर्ण बना सकती हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति–1986 में परीक्षा प्रणाली में सुधार हेतु अंक प्रणाली के स्थान पर ग्रेड दिये जाने की व्यवस्था पर बल दिया गया परंतु एक लंबे अंतराल के बाद सतत एवं व्यापक मूल्यांकन प्रणाली में ग्रेडिंग सिस्टम को व्यवहार में लाने के प्रयास जारी हुए। सतत एवं व्यापक मूल्यांकन और ग्रेडिंग प्रणाली के कार्यान्वयन में अनेक व्यावहारिक कठिनाइयाँ सामने आ रही हैं।

शिक्षा ही हमें इस योग्य बनाती है कि परिस्थितियों के अनुरूप उचित का निर्णय लेकर सही मार्ग का चयन करें और जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न अवसरों पर सही विकल्प का चुनाव कर सकें। शैक्षिक विमर्श और मन्थन के उपरांत शैक्षिक नियामकों, प्रशासकों, बुद्धिजीवियों और शिक्षाविदों का ध्यान मूल्यांकन की निष्पक्ष विधियों को प्रयोग में लाने की ओर उन्मुख हुआ। परंतु वर्षों की मूल्यांकन प्रणाली का अभ्यस्त शैक्षिक जगत मूल्यांकन की इस नयी अवधारणा को सहर्ष स्वीकार करने में संकोच करता रहा। शैक्षिक मूल्यांकन की इन नयी चुनौतियों का सामना करने के उद्देश्य से हमें परम्परागत मूल्यांकन प्रणाली की कमियों और दोषों पर भी एक दृष्टि डालनी होगी।

विद्यार्थियों द्वारा सत्र के अन्त में होने वाली परीक्षा में शामिल होना एक तनावपूर्ण स्थिति होती है जिससे वे भयभीत रहते हैं। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 में परीक्षा तनाव के संदर्भ में कहा गया है–

''10वीं और 12वीं के अन्त में होने वाली परीक्षा की इस दृष्टि से समीक्षा की जानी चाहिए कि अभी के पाठ आधारित और प्रश्नोत्तरी प्रकार की परीक्षा की विधि को बदल दिया जाये क्योंकि इससे तनाव का स्तर बढ़ जाता है और रूढ़िबद्ध अध्ययन को भी बढ़ावा मिलता है। शहरी बच्चे बहुत अच्छा प्रदर्शन करने के लिए तनाव में रहते हैं तो ग्रामीण बच्चे इस कारण तनाव में रहते हैं कि पता नहीं उनकी तैयारी इतनी है भी या नहीं कि वे सफलता पा सकें। असफलता की ऊँची दर विशेषकर ग्रामीणों, गरीबों, सामाजिक रूप से पिछड़े वर्गों के बच्चों में जिस तरह से देखने में आती है उससे पता चलता है कि संपूर्ण मूल्यांकन प्रणाली या परीक्षा पद्धति पर गहन विचार-विमर्श की आवश्यकता है। अगर यह व्यवस्था समुचित और कारगर होती तो कोई कारण नहीं कि बच्चे विकास न कर पायें या सीख न पायें।'' (राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 पृ. 127-128)।

परीक्षा से उपजे तनाव के कारण छात्रों द्वारा आत्महत्या की खबरें एक चिन्ताजनक पहलू है। हमारी परम्परागत परीक्षा प्रणाली अप्रासंगिक, दिशाहीन एवं निरर्थक सिद्ध हो रही है।

शिक्षा की परम्परागत प्रणाली हमारी वर्तमान आवश्यकताओं की पूर्ति करने में सक्षम नहीं हैं । वैश्वीकरण के युग में हमें योग्यता की पहचान नयी प्रविधि के साथ करनी है जो हमारी सामाजिक, आर्थिक आवश्यकताओं को सक्षमता के साथ निष्पादित कर सके । इस दृष्टि से सतत एवं व्यापक मूल्यांकन विद्यालय आधारित मूल्यांकन की वह विधा है जिससे छात्रों में अधिगम क्षमता की वृद्धि होगी और नियत अंतराल पर उनकी प्रगति की समीक्षा हो सकेगी और उन्हें उचित मार्गदर्शन प्राप्त हो सकेगा। यहाँ सतत का आशय निरंतर व आवधिक मूल्यांकन से है वहीं व्यापक का अर्थ छात्र के व्यक्तित्व के समग्र विकास से है। मूल्यांकन के इस नये प्रतिमान में बौद्धिक ज्ञान के साथ पाठ्येत्तर गतिविधियों यथा जीवन कौशल और सामाजिक मानवीय गुणों व मूल्यों के प्रति भी छात्र की सचेतता की परख का भाव निहित है। सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के अंतर्गत बहुवैकल्पिक तकनीक का उपयोग छात्र की उपलब्धियों एवं उनकी ग्रहण क्षमता को प्रदर्शित करता है। वर्ष 2005 में राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा व्यवहार में लाई गई जिसका एक मुख्य उद्देश्य बच्चों के स्कूली जीवन को बाहर के जीवन से जोड़ना है। इसके द्वारा बच्चों में कल्पनाशीलता की अभिवृद्धि कर नये ज्ञान के सृजन द्वारा व्यावहारिक अनुभवों को हासिल करने का अवसर प्रदान करना है। गत वर्षों में इसी आधार पर नये पाठ्यक्रम व नई पाठ्यपुस्तकें बनाई गईं जो वैज्ञानिकता व आधुनिक मांगों के आधार पर छात्रों को ज्ञान के सृजन के लिए अभिप्रेरित कर रही हैं। फिर मूल्यांकन की परम्परगत प्रणाली उस ज्ञान को परखने के लिए उचित कहाँ रह जायेगी? सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के अंतर्गत मुख्य परिवर्तन है- अंकों के स्थान पर ग्रेडिंग प्रणाली तथा सत्र के अन्त में आयोजित की जाने वाली परीक्षा के स्थान पर विद्यालय आधारित वर्ष पर्यन्त मूल्यांकन यथा रचनात्मक और विषयात्मक परख। सामाजिक दृष्टिकोण से अंकों को लेकर समाज में एक प्रतिष्ठा बनी हुई है। वास्तविकता यह है कि एक अंक के अंतर के आधार पर छात्रों की योग्यता में विभेद करना न्याय संगत नहीं है। ग्रेडिंग प्रणाली मूल्यांकन की वह विधा है जिसमें छात्रों की उपलब्धि को दर्शाने के लिए ग्रेड उपयोग में लाया जाता है। छात्रों को उनकी दक्षता के अनुरूप विभिन्न योग्यता स्तरों में वर्गित करके संकेतों व वाक्यों के माध्यम से प्रदर्शित किया जाता है। समान योग्यता वाले विद्यार्थियों को एक ही योग्यता स्तर में रखा जाता है। इस अशय से मूल्यांकन योजना में 5 बिंदु निर्पेक्ष ग्रेड प्रणाली व्यवहार में लायी जाती है। शैक्षिक क्षेत्र के साथ

सह शैक्षिक क्षेत्र में पाठ्येत्तर क्रियाओं में सहभागिता एवं सामाजिक और व्यक्तिगत गुणों के लिए मूल्यांकनकर्ता को प्रत्येक क्रिया के लिए अलग-अलग क्रिया विधि निर्धारित करनी होती है तथा अंतिम उत्पाद के रूप में कुछ वांछित मानकों की पहचान कर इन्हीं मानकों के आधार पर विद्यार्थियों द्वारा किये गये कार्य का अवलोकन किया जाता है और उन्हें मानक प्रदान किये जाते हैं। 'प्रगति-पत्र (रिपोर्ट कार्ड) तैयार करने से शिक्षक को अपने प्रत्येक विद्यार्थी के बारे में यह सोचने का मौका मिलता है कि उसने सत्र के दौरान क्या सीखा और किस क्षेत्र में उसको ज़्यादा मेहनत करने की ज़रूरत है। ऐसी रिपोर्ट कार्ड को लिख पाने के लिए शिक्षक को प्रत्येक विद्यार्थी के बारे में सोचना होगा और इसीलिए रोज़मर्रा के शिक्षण के दौरान उस पर ध्यान देना होगा। इसके लिए विशिष्ट परीक्षाओं की ज़रूरत नहीं है। स्वयं सीखने वाली गतिविधियाँ बच्चों में निरंतर चलने वाले अवलोकनात्मक एवं गुणात्मक आकलन का आधार बनती हैं। अवलोकन के आधार पर रोज़ की दैनंदिनी रखने से निरंतर, सतत एवं व्यापक मूल्यांकन में मदद मिलती है। एक शिक्षक की साप्ताहिक डायरी से लिया गया अंश –

''करण को अपने काम में मज़ा आया। उसको वे किताबें फौरन पसंद आईं जो छोटी थीं और जिनमें जानकारी थी। वह कहता है कि उसे साफ़ और सादी भाषा पसंद है। तथ्यों को लिखते हुए वह अक्सर संक्षिप्त उत्तर लिखता है। उसका कहना है कि इससे वह चीज़ों को आसानी से समझ पाता है। उसे व्यावहारिक तरीका पसंद है''।

इसी तरह विभिन्न स्तर पर बच्चों के काम और उनके बारे में लिखने से शिक्षार्थी और शिक्षक को उसके अधिगम की प्रगति का व्यवस्थित रिकार्ड मिल जाता है'। (राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005, पृ. 83)

राष्ट्रीय पठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 के अनुसार पाठ्यचर्या के सभी विषय परीक्षा द्वारा नहीं जाँचे जा सकते, बल्कि ऐसा करना तो पाठ्यचर्या के उन क्षेत्रों के सीखने की प्रकृति के विपरीत होगा। इनमें काम, स्वास्थ्य, योग, शारीरिक शिक्षा, संगीत एवं कला शामिल हैं। यद्यपि शारीरिक शिक्षा और योग के कौशल आधारित पक्षों का परीक्षण किया जा सकता है परंतु स्वास्थ्य से जुड़े पक्षों को सतत और गुणात्मक आकलन की ज़रूरत होती है। वर्तमान में इन्हें पाठ्यचर्या में कम महत्व देने का चलन है।

'अंक' दिए बिना भी बच्चों का इन क्षेत्रों में विकास के लिए आकलन किया जा सकता है। भागीदारी, रुचि और जुड़ाव तथा जिस स्तर तक क्षमताओं एवं कौशलों का विकास हुआ, ये कुछ सूचक हैं जिनके आधार पर शिक्षक यह समझ बना सकते हैं कि बच्चों को इन गतिविधियों से कितना फ़ायदा हुआ है। बच्चों को अगर अपने अधिगम के बारे में खुद बताने के लिए

कहा जाए तो उससे भी शिक्षकों में बच्चों की शैक्षिक उन्नति संबंधी अंतर्दृष्टि विकसित होगी और पाठ्यचर्या एवं शिक्षाशास्त्रीय सुधार करने के आधार मिलेंगे।

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के प्रतिमान को लेकर शैक्षिक जगत के साथ इससे संबंधित धारकों में संशय के भाव उभरे हैं। जनमानस इस मूल्यांकन के विभिन्न आयामों से परिचित न होने के कारण इसे पूर्णतया स्वीकार करने के लिए सहर्ष तैयार नहीं है। उनकी शंका है कि परीक्षा की अवधारणा न होने से छात्र की अधिगम क्षमता व उसके ज्ञान और कौशल उपलब्धि पर नकारात्मक असर पड़ेगा। साथ ही वे स्कूल की आंतरिक मूल्यांकन प्रणाली में इमानदारी को लेकर भी सशंकित हैं। इसके समाधान की ज़िम्मेदारी हमारे शैक्षिक संस्थानों की है, जो जनमानस में इसके ग्राह का भाव उत्पन्न कर सकें। विद्यालय स्तर पर अभिभावक सम्मेलन में इस पर चर्चा कर समग्र जानकारी छात्र और अभिभावकों को दी जा सकती है। इसकी प्रमुख समस्या अध्यापकों में सूक्ष्म आकलन कौशल और निरीक्षण योग्यता को लेकर है। मूल्यांकन के विभिन्न क्षेत्रों के लिए मूल्यांकनकर्ता को योग्य एवं यथेष्ठ जानकारी उपलब्ध होनी चाहिए। विद्यालय स्तर पर लागू करने के पूर्व सघन प्रशिक्षण की व्यवस्था इकाई स्तर पर करके इसे प्रभावकारी बनाया जा सकता है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 में विद्यालयी स्तर पर सतत एवं व्यापक (समावेशी) मूल्यांकन की सिफ़ारिश की गई है जो निम्न उद्धरण से स्पष्ट है–

'सतत एवं समावेशी मूल्यांकन को ही एक सार्थक मूल्यांकन माना गया है। हालांकि इस पर भी सावधानीपूर्वक विचार करने की ज़रूरत है कि इसका प्रभावी उपयोग करने के लिए कब लागू करना है। अगर मूल्यांकन को सार्थक रूप से लागू करना है और उसके आकलन की विश्वसनीयता रखनी है तो ऐसा मूल्यांकन शिक्षकों से बहुत ज़्यादा समय देने की मांग करता है तथा यह मांग भी करता है कि वह सावधानी और कुशलता से रिकार्ड रखे। अगर यह प्रक्रिया महज बच्चों के बोझ को बढ़ाए और सारी गतिविधियों को आकलन का ज़रिया बना दे और उन्हें शिक्षक की ताकत का अनुभव कराती रहे तो वह शिक्षा के प्रयोजन को ही विफल कर देती है। जब तक व्यवस्था ऐसे आकलन के लिए पर्याप्त रूप से तैयार नहीं है तब तक शिक्षकों के लिए यही बेहतर है कि वे आकलन के सीमित रूपों का ही उपयोग करें। लेकिन उसमें वे आयाम शामिल कर लें जिनसे आकलन सीखने के एक सार्थक दस्तावेज़ के रूप में उभर पाए।' (राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005, पृ. 86)

एक सोच उन वर्गों की भी है जो सतत एवं व्यापक मूल्यांकन में प्रयुक्त की जाने वाली ग्रेडिंग प्रणाली में पास–फेल की व्यवस्था न होने से छात्रों में अध्ययनरत होने की प्रेरणा के कुंठित होने का विचार देते हैं। परंपरागत

अंकीय प्रणाली जो जन मानस में गहरी पैठ कर चुकी है उसे समाप्त करने में मनोवैज्ञानिक स्तर पर ही निजात मिल सकती है। अध्यापकों का एक वर्ग इसे कार्य दबाव के रूप में भी देखता है उनके अनुसार मूल्यांकन की यह प्रणाली लागू करने में उन्हें अधिक श्रम व समय लगाना होगा। सत्र के अन्त में परीक्षा उपरांत एक छोटी अवधि के लिए कापियों के मूल्यांकन का भार पहले भी रहता था परंतु सतत एवं समग्र मूल्यांकन उन्हें एक बोझ के रूप में लग रहा है। जबकि वास्तव में ऐसा नहीं है। इस सोच को प्रशिक्षण और चर्चा के द्वारा बदला जा सकता है। कक्षा के सभी छात्रों का मूल्यांकन विभिन्न उपकरणों एवं प्रविधियों के सहारे वस्तुनिष्ठता के साथ किया जा सकता है।

निष्कर्ष

अभिभावकों, शिक्षक समुदाय एवं छात्रों से चर्चा करके सी. सी. ई. के संदर्भ में उभरे संशय को दूर किया जा सकता है। बच्चों पर से शिक्षा का दबाव कम करने, मूल्यांकन को व्यापक और नियमित बनाने, शिक्षकों को रचनात्मक शिक्षण का अवसर उपलब्ध कराने तथा श्रेष्ठतर योग्यता वाले विद्यार्थियों को तैयार करने की दृष्टि से सी.सी.ई. की प्रणाली प्रासंगिक एवं यथोचित है। मूल्यांकन की यह विस्तृत और विश्वसनीय पद्धति जहां छात्रों में बाह्य परीक्षा के कारण उत्पन्न तनाव को कम करेगी और छात्रों को चिन्ता से मुक्ति मिलेगी वहीं दूसरी ओर छात्र की विशेष योग्यता को पहचान कर उसे प्रोत्साहन प्रदान करने से शिक्षा में व्यावहारिक अनुभव का लाभ भी मिलेगा। परिवेश के साथ अन्त:क्रिया करके प्राप्त ज्ञान टिकाऊ एवं सार्थक होगा, तो दूसरी ओर 'शिक्षा बिना बोझ के' की धारणा चरितार्थ होगी। छात्रों के परीक्षण व रटने की पद्धति से दूर होने के फलस्वरूप एक शैक्षिक अभ्यास का संस्थापन हो सकेगा जिससे विद्यार्थी जीवन के विभिन्न पहलुओं को प्रासंगिक बना सकेंगे। जीवन कौशल की दृष्टि से भविष्य के जीवन में सुधार की संभावनाएं ज़्यादा रहेंगी तथा सामाजिक व व्यक्तिगत गुणों का विकास बेहतर तरीके से हो सकेगा।

किसी भी व्यवस्था में नवीन परिवर्तनों को दो प्रकार से लागू किया जा सकता है। पुरानी व्यवस्था के स्थान पर समग्र रूप में नयी व्यवस्था को अपना लिया जाना अथवा पुरानी व्यवस्था के किसी एक क्षेत्र में नये परिवर्तन को प्रयोगात्मक रूप से लागू करना और प्राप्त परिणामों के आधार पर उसे अन्य क्षेत्रों में लागू करना। विभिन्न राष्ट्रीय शिक्षा आयोगों और समितियों ने भी इस क्षेत्र में अपने सुझाव दिये हैं लेकिन उन्हें व्यवहार में कार्यान्वित करने में हम पूर्णतया सफल नहीं रहे हैं। आवश्यकता इस बात की है कि सतत एवं व्यापक मूल्यांकन को ईमानदारी और दृढ़ इच्छा शक्ति के साथ लागू करने के सकारात्मक प्रयास किये जायें जिससे

मूल्यांकन की प्रक्रिया की इस विधा के संदर्भ में उभरी शंकायें समाप्त हों। जनमानस में इसके प्रति व्यापक प्रचार-प्रसार कर मूल्यांकन की इस प्रक्रिया द्वारा विद्यालयी शिक्षा में गुणात्मक सुधार की संकल्पना को साकार किया जा सके।

संदर्भ

अग्रवाल, जे.सी. 2007. *भारत में शिक्षा व्यवस्था का इतिहास*, शिप्रा प्रकाशन दिल्ली

एन.सी.ई.आर.टी. 2001. *विद्यालय में ग्रेड प्रणाली*, नयी दिल्ली

_____ 2006. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005*, नयी दिल्ली

लोढ़ा, जितेन्द्र कुमार. 2009. *शिक्षा में गुणवत्ता का चिंतन*, दर्पण

शारदा, जितेन्द्र. 2003. *शिक्षा की समस्यायें*, कृति प्रकाशन, नयी दिल्ली